रघुवंश मिश्रा

विक्रम और बैताल

सरल नागरिक शास्त्र

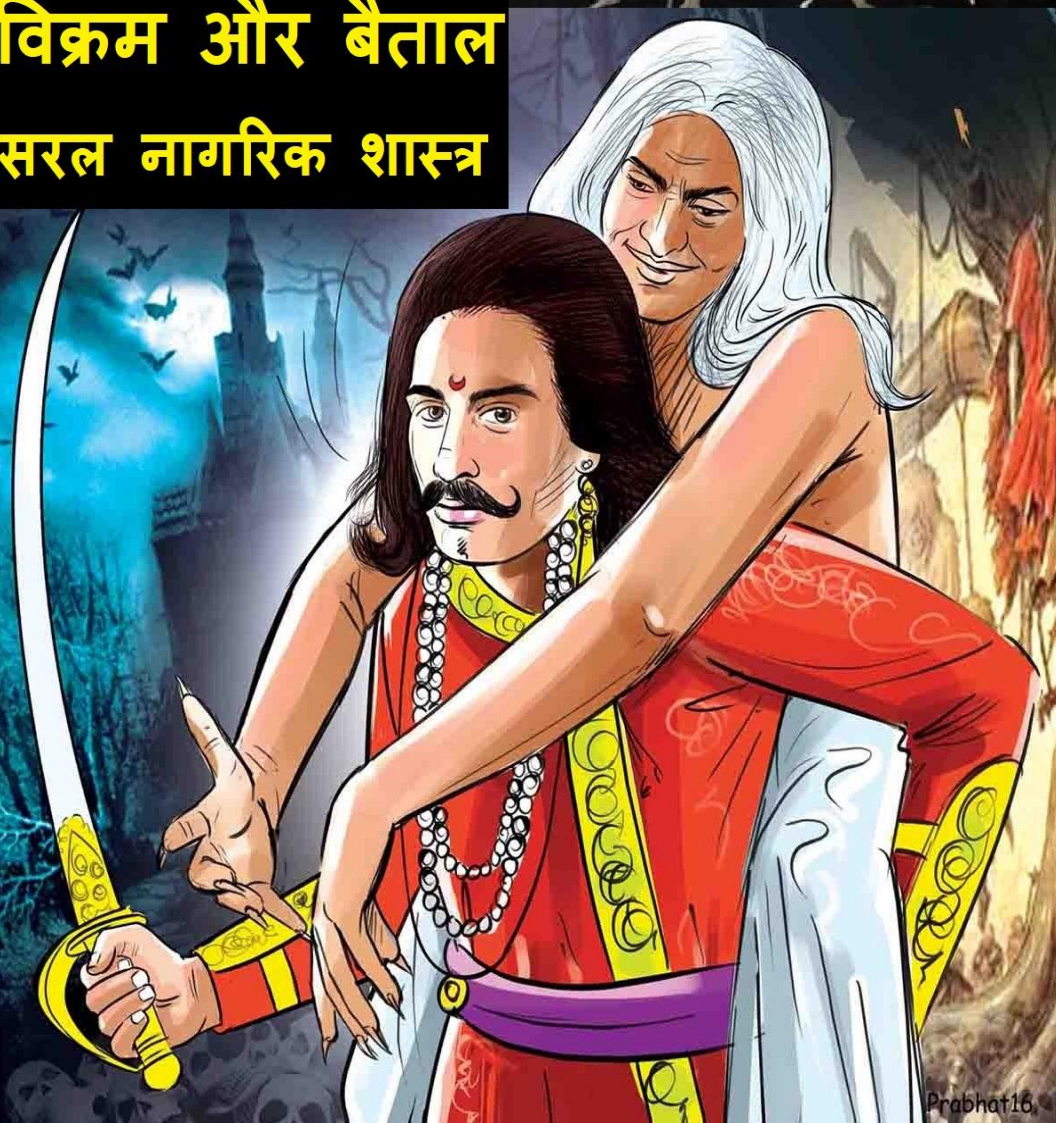

अनुक्रमणिका

क्र	अध्याय	पेज
1	प्रस्तावना	3
2	पारस्पारिक निर्भरता	6
3	कातिक और केतकी का गांव	12
4	पंचायती राज	16
5	नगर पालिका और नगर निगम	25
6	ज़िला प्रशासन	30
7	सार्वजनिक सम्पत्तियां	34
8	बच्चों के अधिकार	38
9	सामान्य चेतना	42
10	ट्रांसजेण्डर / थर्ड जेण्डर	55

प्रस्तावना

प्रिय शिक्षक साथियों,

हम बचपन में जब कभी, अपने दादा-दादी या नाना-नानी के साथ बैठते थे तो उनसे कहानी सुनाने की ज़िद ज़रूर करते थे. हमारे दादा-दादी और नाना-नानी अपनी कहानियो में धार्मिक, ऐतिहासिक, काल्पनिक और स्थानीय परिवेश की बातों को रोचक तरीके से और हाव-भाव के साथ प्रस्तुत करके जहां एक ओर हमे संस्कारवान एवं ज्ञानवान बनाने का कार्य करते थे, वहीं दूसरी ओर स्वस्थ मनोरंजन भी किया करते थे. मुझे आज भी बचपन में सुने गए कई कहानी-किस्से याद हैं, जिनमें विक्रम और बैताल की कहानी भी एक है।

अब आप भी ज़रा याद करिए कि कैसे बैताल, विक्रम के कंधे पर बैठकर उससे कहता है कि वह विक्रम को कहानी सुनाकर अंत में उससे प्रश्न पूछेगा और प्रश्न का उत्तर नहीं दिए जाने पर अनर्थ कर देगा. हम इन सभी कहानियो को बड़े चाव से सुनते थे, और बैताल व्दारा पूछे गए प्रश्नो का उत्तर स्वयं ही विक्रम बनकर देने का

प्रयास करते थे. इस पूरी प्रक्रिया में हमें बहुत आनंद आता था.

साथियों, विक्रम और बैताल के संवाद को आधार बनाकर मैने कक्षा 6वीं, 7वीं व 8वीं के नागरिक शास्त्र से सम्बंधित पाठ्य-वस्तु को सरल, संक्षिप्त और रोचक ढ़ंग से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है. प्रस्तुतीकरण के इस क्रम में मैने कुछ परिवर्तन भी किया है. जैसा कि आपको याद होगा कि बैताल पहले पूरी कहानी विक्रम को सुनाता था और अंत में प्रश्न पूछता था, किन्तु मेरे इस प्रस्तुतीकरण में बैताल विक्रम से बीच-बीच में भी प्रश्न करता है, जिसका उत्तर विक्रम देता है. साथ ही इस प्रस्तुतीकरण में निरंतरता भी मिलेगी, अर्थात एक पाठ का सबंध दूसरे पाठ से स्थापित करने का प्रयास भी किया गया है।

इससे पहले मेरे व्दारा प्रस्तुत कक्षा 6, 7 एवं 8 के इतिहास का पद्यों में रूपान्तरण आप सभी के व्दारा खूब पसन्द किया गया है. उसी से प्रोत्साहित होकर मैने नागरिक शास्त्र की विषय-वस्तु को रोचक बनाने का

प्रयास किया है. आशा है मेरी अन्य रचनाओं की तरह इससे भी आप लाभ लेकर अपनी शाला के बच्चों को लाभांवित करने का कार्य करेंगे.

धन्यवाद,

रघुवंश मिश्रा
उ.व. शिक्षक
पू.मा.शा.-टेगनमाड़ा

पारस्पारिक निर्भरता

विक्रम के कंधे पर बैठा बैताल कहानी सुनाना आरंभ करता है - एक समय की बात है, रघुपुर नामक गांव में कुछ परिवार आपस मे मिल-जुलकर रहते थे. उसी गांव मे शिवचंपक नाम का एक व्यक्ति भी रहता था. वह बहुत चालाक था. गांव के सभी लोगो को उसके पास जाना पडता था, किन्तु वह गांव के आम लोगो के पास नहीं आता-जाता था. विक्रम अब तुम यह बताओ कि शिवचंपक का गुज़ारा कैसे होता था?

विक्रम ने बोला - देखो बेताल - जिस प्रकार गांव के अन्य लोगों की सेवा लेकर उस सेवा के बदले में गांव वालों को कुछ रुपए और वस्तु उसके व्दारा दिया जाता था उसी प्रकार वह दूसरे गांव के सेठ को अपनी सेवा देता था, जिसके बदले में उसे उस सेठ से रूपए और वस्तु मिलते थे, जिसे वह गांव वालों को उनकी सेवा लेकर उनके ज़रूरत के अनुसार दे देता था.

इस पर बेताल ने कहा - बहुत अच्छा विक्रम पर यह तो बताओ कि लोगों की आवश्यकता क्या-क्या होती है, और तुम्हारे राज्य में इसकी क्या व्यवस्था है ?

विक्रम ने बतलाना शुरू किया - मेरे राज्य के प्रत्येक गांव में लोग आपस में मिल-जुलकर रहते हैं, और अपने रुचि के अनुसार काम करते हैं. उन कार्यो को करने से उन्हें जो कुछ प्राप्त होता है, उससे वे लोग अपनी आवश्यकतानुसार सेवा वस्तु या रूपये प्राप्त करते हैं. बैताल इसे मै आपको एक उदाहरण व्दारा और अधिक विस्तार से समझाता हूं. जैसे मेरे राज्य में कुछ लोग खेती-किसानी का कार्य करते हैं. निश्चित समय पश्चात फसल को निकट के बाज़ारो में बेचकर, उससे प्राप्त रुपये से वह अपनी आवश्यकतानुसार सेवा या वस्तु प्राप्त करते हैं. इसी प्रकार मेरे राज्य में रहने वाले सब लोग नाई, कुम्हार, बढ़ई, दूधवाले, मशीन का कार्य करने वाले, दुकान चलाने वाले, घर बनाने वाले लोग अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं. पर विक्रम तुम मुझे और बतलाओ कि क्या वह सभी चीजें, जिनकी आवश्यकता तुम्हारे राज्य के

लोगो को होती है, तुम्हारे राज्य में ही प्राप्त हो जाती हैं - बैताल ने आगे पूछा.

नही ऐसी बात नही है, ऐसी बहुत सी चीज़ें हैं, जिनकी मेरे राज्य कमी है और कई ऐसी भी चीजें है, जिनकी यहां बहुतायत है. मेरे राज्य में कमी और बहुतायत वाली चीज़ों की स्पष्ट पहचान पहले से करके, उनकी उचित व्यवस्था की जाती है, ताकि मेरी जनता को किसी भी प्रकार कष्ट और परेशानी न हो तथा वे अपना जीवन आनंद पूर्वक व्यतीत कर सकें. वाह विक्रम, तभी तो तुम एक बुध्दिमान और प्रजा पालक राजा के रूप में जाने जाते हो. पर एक बात और बतलाओ, कि तुम्हारे राज्य में जिन वस्तुओ कि कमी है, उन्हे तुम कहां से प्राप्त करते हो, तथा जिन चीजों की अधिकता है, उन्हें कहां भेजते हो. सुनो बैताल - इसके लिये मैने अपने राज्य में दो प्रकार की व्यवस्था की है - 1. राज्य के भीतर ही कमी व बहुतायत वाली चीज़ों व स्थानो की पहचान; 2. राज्य के बाहर कमी व बहुतायत वाली चीज़ों व स्थानो की पहचान. विक्रम तुम्हारी यह बात मुझे स्पष्ट रूप से

समझ नहीं आयी, एक बार फिर से और स्पष्ट उदाहरण सहित समझाओ. बैताल ने कहा. अब जरा ध्यान लगाकर सुनना बैताल, विक्रम ने कहना आरंभ किया -जैसे मेरे राज्य महाराष्ट्र में पेटोल, डीज़ल, दवाई; गुजरात में तेल, नमक, कपड़ा; उत्तरप्रदेश में शक्कर; केरल में नरियल, मसाला; पंजाब में सायकिल, गेहूं; जम्मू-काश्मीर में उनी वस्त्र, फल; एवं असम में चाय बहुतायत से होते हैं. इन चीजो को राज्य के भीतर ऐसे स्थानों पर भेजने का प्रबंध करता हूं जहां इनकी कमी हो. उसी प्रकार इन स्थानो में कमी वाली वस्तुओ को दूसरे राज्य से मंगाने की व्यस्था करता हूं.

बहुत अच्छा विक्रम तभी तुम्हारा राज्य दिनो-दिन उन्नति कर रहा है, बैताल बोला. अब ज़रा अपने दूसरे बिन्दु पर भी प्रकाश डालो.

तो आगे सुनो बैताल - विक्रम ने कहना शुरू किया - कुछ चीजें ऐसी भी होती है, जिनकी बहुतायत इतनी होती है, कि वह मेरे राज्य के भीतर की आवश्यकता की पूर्ति के उपरान्त भी बच जाती हैं. ऐसी वस्तुओं को मै अपने

निकटवर्ती देशों में भेज देता हूं, और बदले में उनसे विदेशी मुद्रा प्राप्त करता हूं. इसी प्रकार कुछ चीजें ऐसी है, जिनकी कमी मेरे पूरे राज्य में बनी रहती है. इन चीजों की आपूर्ति मैं दूसरे देशों से मंगाकर करता हुं. जैसे मुझे मेरे राज्य के लिये पेट्रोलियम, दवाई, मशीन व रक्षा उपकरण दूसरे देशों से मंगाना पडता है, और चावल, चाय, मसाले, कपड़े, दूसरे देशों में भेजे जाते हैं.

बैताल कुछ देर तक शांति के साथ विक्रम के कंधे पर बैठा रहा और विक्रम धीरे-धीरे अपने राजधानी की ओर कदम बढ़ाता रहा. तभी बैताल ने गम्भीर होकर विक्रम से पुछा - अच्छा विक्रम अब तुम मेरे अंतिम प्रश्न का उत्तर बतलाओ. प्रश्न है, कि आज की इस चर्चा का उदेश्य क्या है?

विक्रम पहले से अधिक गम्भीर स्वर में बोला - बैताल हम सभी लोगो को यह समझना होगा कि एकाकी जीवन असम्भव है. जो कोई भी अकेले जीने की कोशिश करेगा उसका जीवन अत्यंत कष्ट पूर्ण होगा. जिस प्रकार एक मनुष्य दूसरे मनुष्य का पूरक होता है, उसी प्रकार एक

राज्य, दूसरे राज्य का और एक देश दूसरे देश की आवश्यकताएं पूरी करता है. इसे ही हम पारस्पारिक निर्भरता के नाम से जानते हैं, और इसी से हम सबका जीवन सुख से व्यतीत होगा.

बहुत अच्छा विक्रम, मेरी पहली परीक्षा में तुम पास हो गए. अगली परीक्षा के लिये हम कल मिलेंगे. ऐसा कहकर बैताल वहां से चला गया।

कातिक और केतकी का गांव

दूसरे दिन विक्रम के कंधे पर बैठा बैताल अपनी बात आरंभ करते हुए कहता है - विक्रम कुछ दिन पहले मैने एक गांव में देखा कि कुछ बच्चे पढने पाठशाला नहीं गए थे. मैने पास जाकर बच्चों से चर्चा की तब पता चला कि पाठशाला नदी के उस पार है, और वहां तक जाने के लिए कोई पुल भी नहीं बना है. क्या तुम्हारे देश में भी ऐसा कोई स्थान है, जहां बच्चो को शाला जाने के लिए पुल रहित नदी पार करना पड़ता है? इस पर उदास मन से विक्रम ने कहा - बैताल आप सही कह रहे हैं. इस सम्बन्ध में बहुत प्रयास किया, पर अब भी कुछ स्थान ऐसे बचे हुए हैं, जहां नदी पर पुल नही है, लेकिन मै आपको यह विश्वास दिलाता हूं कि जल्दी ही इस समस्या का समाधान हो जाएगा. तत्कालिक समाधान के लिए लोगो के श्रम दान से ऐसे नदियों में रेत की बोरी से अस्थाई पुल तैयार की गई है, जो बच्चों के शाला जाने में सहायक हो रहा है. गहरी सांस खीचकर बैताल ने कहा - ठीक है विक्रम तुम कह कह रहे हो तो तुम्हारी बात पर

विश्वास कर लेता हूं, लेकिन इसे हमेशा याद रखना. अपनी बातो को आगे बढाते हुए बैताल ने पूछा - विक्रम मुझे उसी गांव में कुछ महिलाए साथ-साथ काम करती दिखीं. वे महिलाए कौन थीं और वे क्या कर रही थी ?

विक्रम ने बतलाया कि हमने अपने प्रत्येक गांव में कुछ महिलाओ का समूह बनाया है, जिसे स्व-सहायता समूह कहते हैं. ये महिलाए समूह में इकट्ठे होकर अपने रुचि के अनुसार कार्य जैसे पापड, अगरबत्ती,आचार, मुरब्बा, दोना-पत्तल बांस की टोकरी, चटाई, माचिस की तीली इत्यादि बनाने का कार्य करते हैं. जिस स्थान पर ये महिलाए इन कार्य को करते हैं, वह स्थान स्व-सहायता केन्द्र कहलाता है. "बहुत सुन्दर विक्रम बहुत सुन्दर. तुम्हारे इस कार्य ने मेरा मन मोह लिया. पर यह तो बतलाओ कि ये समूह इन बनाई गई सामाग्रियों का क्या करते हैं", बैताल ने आगे पूछा. आपका प्रष्न भी प्रासंगिक है बैताल -विक्रम ने कहां ये महिलाए अपने व्दारा निर्मित सामाग्रियों में से कुछ का उपयोग अपनी निजी ज़रूरतो को पूरा करने में करती हैं और बची हुई सामाग्रियों को वे

निकट के किसी हाट, बाजार, मडई, मेले या शहर की दुकानो में बेचकर नगद आय का अर्जन करती हैं. इस नगद राशि को महिलाएं आपस में बांटकर अपनी घरेलु आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ-साथ बचत भी करती हैं. ‘‘अदभुत, अति-उत्तम’’, बैताल ने प्रसन्न मुद्रा में कहा, ‘‘तभी तुम्हारा राज्य इतना प्रसिध्द है. पर विक्रम मुझे तुम्हारे राज्य के एक गांव में कुछ अच्छी स्थिति दिखाई नहीं दी. मैने देखा कि कुछ लोग दर्द और पीड़ा से कराह रहे थे और कुछ लोग उनका इलाज कर रहे थे. आखिर उस गांव में ऐसी स्थिति आई ही क्यो और आगे ऐसी स्थिति न बने इसके लिए तुमने क्या योजना बनाई है?’’

इस पर विक्रम ने कहां - बैताल मैने स्थानीय निकायो के पदाधिकारियों के माध्यम से यह बात पूरे गांव के लोगो यह बात तक पहुचाई है कि घरों से निकलने वाले कचरे को निश्चित स्थान पर बने गढ़ढ़े में ही डालें. अपने आस-पास के स्थान को हमेशा साफ रखें तथा समय-समय पर बच्चों को टीका लगवाएं जिससे पोलियो, खसरा, कुकर खांसी जैसे संक्रामक रोगो से बचा जा सके।

“वाह विक्रम तुमने तो मेरे सभी प्रश्नो का सही-सही उत्तर दे दिया. अब इसे सारांश में एक बार पुनः बतलाओ”, बैताल ने हंसते हुए विक्रम से कहा. इस पर विक्रम भी मुस्कराते हुए बोला - बैताल गांव वालो को अपनी आवश्यकता, सशक्तीकरण व सुरक्षा के लिए स्वयं जागरूक व तत्पर रहना चाहिए. शासन के तरफ से प्रत्येक गांव के लिए बहुत कुछ किया ही जाएगा, किन्तु उसकी आस में हाथ पर हाथ धरकर बैठे नही रहना चाहिए. जैसे कातिक व केतकी के गांव वालों ने किया, वैसे ही सबको करना चाहिए. अगले दिन फिर मिलने की बात कहकर बैताल चला गया।

पंचायती राज

बैताल ने पूछना शुरू किया - “विक्रम मै जब कातिक और केतकी के गांव के बारे में चर्चा कर रहा था, तो मैने पाया कि उस गांव के सभी काम व्यवस्थित तरीके से किये जा रहे थे. क्या आपके राज्य के सभी गांवो में ऐसे ही कार्य होते है, और अगर हां तो यह सब कैसे सम्भव होता है?”

विक्रम ने कहा - “बैताल आपके मन में उत्पन्न यह प्रश्न स्वाभाविक और प्रासंगिक है. अब में आपको अपने राज्य के सभी गांवो में की गई व्यवस्थाओं के सम्बंध में विस्तार से बतलाता हूं. ध्यान देकर सुनना और कही कुछ पूछने की इच्छा हो तो ज़रूर पूछना.” बैताल बोला - “ठीक है विक्रम मै पूरी तन्मयता के साथ आपकी बात को ध्यान से सुनूंगा और आवश्यकतानुसार प्रश्न भी पूछूंगा.” विक्रम ने बताना शुरू किया - “हमने अपने राज्य के सभी गांवों में कार्यो के व्यवस्थित सम्पादन और स्थानीय कार्यो में लोगो की सहभागिता प्राप्त करने के उदेश्य से ऐसे सभी गांवों को ग्राम-पंचायत के रूप मे

गठित किया है जिनकी जनसख्या 1000 है. ग्राम-पंचायतों को जनसंख्या के आधार पर वार्डो में विभाजित किया गया है.'' ''ये वार्ड क्या होते हैं? उदाहरण देकर समझाओ'', बैताल ने पूछा.

विक्रम ने कहा - ''बैताल कातिक और केतकी के गांव की जनसख्या करीब 4000 है. 18 साल या उससे अधिक के लोगों की संख्या, को ध्यान में रखकर खण्डो में विभाजित किया जाता है. इन खण्डो में लोगो की सख्या लगभग बराबर होती है और इन्हीं खण्डों को वार्ड के नाम से जाना जाता है.'' बैताल ने फिर पूछा - ''गांव को खण्डों में बांटने के लिए 18 साल या उससे अधिक उम्र के लोगो को आधार क्यों बनाया गया?'' विक्रम ने बताया - ''हमने अपने राज्य में यह नियम बनाया है कि 18 साल या उससे अधिक उम्र के लोग ही अपने वार्ड का प्रतिनिधि चुन सकते हैं.''

''यह प्रतिनिधि और चुनाव क्या होता है'', बैताल ने जानना चाहा.

‘‘किसी वार्ड के ऐसे सभी लोगों व्दारा यदि कोई कार्य बिना स्पष्ट जिम्मेदारी के किया जाए तो कार्यो में अव्यवस्था उत्पन होगी. ऐसी परिस्थिति उत्पन्न न हो, इसके लिए वार्ड के सभी सदस्य मिलकर अपना एक प्रतिनिधि चुनते हैं, जो उस वार्ड का पंच कहलाता है, और जिन लोगो के व्दारा पंच चुना जाता है, वह उस वार्ड के मतदाता कहे जाते हैं’’, विक्रम ने बतलाया.

‘‘परन्तु विक्रम, जैसा कि तुम अभी बतला रहे थे, कातिक और केतकी के गांव में 20 वार्ड है, इसलिये वहां 20 पंच चुने जाऐंगे. तो क्या इन 20 पंचो व्दारा उस गांव के कार्यो को एक साथ करने से अव्यवस्था उत्तपन नहीं होगी’’, बैताल ने पूछा. ‘‘बैताल आप थोडा भ्रमित हो गए हैं. जिस प्रकार एक वार्ड के सभी मतदाताओं व्दारा अपना पंच चुना जाता है, उसी प्रकार गांव के सभी वार्डो के मतदाताओं व्दारा अपना एक सर्वमान्य प्रतिनिधी चुना जाता है, जो उस गांव के सभी वार्डो का प्रतिनिधित्व करता है, और वह उस गांव का सरपंच कहलाता है’’, विक्रम ने समझाया.

विक्रम आगे बोलना शुरू किया - ‘‘इस प्रकार किसी गांव के सभी वार्डो के निर्वाचित पंच और सरपंच मिलकर उस गांव के ग्राम पंचायत का गठन करते हैं.’’ ‘‘अच्छा विक्रम अब यह बतलाओ कि क्या गांव के मतदाता अपने प्रतिनिधियों का चुनाव प्रत्येक साल करते हैं? निर्वाचित प्रतिनिधियों के मृत्यु हो जाने पर क्या व्यवस्था की जाती है’’, बैताल ने पूछा. विक्रम ने कहा- ‘‘सामान्य परिस्थितियों में प्रत्येक ग्राम पंचायत में प्रतिनिधियो का चुनाव 5 साल में एक बार होता है, किन्तु यदि किसी सदस्य की मृत्यु हो जाए या स्वेच्छा से कोई अपना पद छोड दे तो ऐसे सदस्यों के स्थान की पूर्ति 6 मास के भीतर चुनाव कराके अनिवार्य रूप से करना होता है. ऐसा चुनाव उपचुनाव कहलाता है.’’

बैताल ने आगे पूछा - ‘‘इन कार्यो को करने के लिए धन कहां से प्राप्त होता है?’’ विक्रम ने कहा - ‘‘सभी ग्राम पंचायतो में वार्ड के पंच अपने वार्ड के लिए आवश्यक कार्यो का परीक्षण कर ग्राम-पंचायत की बैठक में सरपंच के सामने अनुमोदन के लिए रखते हैं. ग्राम-पंचायत के

निर्वाचित प्रतिनिधि इन प्रस्तावों पर विचार कर बहुमत से निर्णय लेते हैं, कि कौन सा कार्य किया जाए और कौन सा नहीं. कातिक और केतकी के गांव में 20 पंच हैं, तो जिन कार्यो पर 10 से अधिक पंचो की सहमति होगी, वह कार्य किया जाएगा अन्य कार्य नहीं. इन स्वीकृत कार्यों के लिए राज्य की ओर से सभी ग्राम-पंचायतो को समय-समय पर धन उपलब्ध कराया जाता है.'' बैताल ने कहा - ''यदि राज्य के तरफ से धन उपलब्ध कराने में विलम्ब हो, तब क्या इन ग्राम-पंचायतो में कुछ काम नहीं होता?'' ''नहीं बैताल ऐसा बिल्कुल नहीं है'', विक्रम ने कहा. ''जैसा आपने कातिक और केतकी के गांव में देखा था, कि लोगो ने नदी पार करने के लिए रेत की बोरी से पुल बना लिया था. इससे लोगो को आने-जाने में सुविधा तो हुई ही साथ ही नदी में पानी भी इकठठा हुआ, जिसका उपयोग गांव वाले सिंचाई के लिए करते हैं. जिनकी खेती में इस पानी का उपयोग कर सिंचाई किया जाता है, ग्राम-पंचायत उन किसानो से सिंचाई कर वसूल करती है जिससे ग्राम-पंचायत को आय होती है. इसी प्रकार गांव के पशु, मकान, दुकान, तालाब, बाज़ार, व खनिजो पर भी

कर वसूल करके पंचायत अपनी आय का सोत्र बनाती है.'' ''बहुत अच्छा विक्रम'', बैताल ने प्रसन्न होकर कहा, ''परन्तु अब यह भी बतलाओ कि इन राशियों का उपयोग पंचायते कैसे और किन कार्यो में करती हैं?''

विक्रम ने कहा - ''पंचायतें अपने सभी सोत्रों से प्राप्त आय व उसके अनुरूप किए जाने वाले कार्यों पर होने वाले व्यय का विवरण गांव के लोगो के समूह में प्रस्तुत करते हैं. गांव के लोगों का यह समूह, ग्राम-सभा कहलाता है. ग्राम सभा की स्वीकृति मिलने पर ही आय-व्यय का कार्य किया जा सकता है, अन्यथा नहीं.'' ''इस प्रकार के सभी विवरणो को लिखने व रखने के लिए होशियार व्यक्ति की आवश्यकता पडती होगी, इसके लिए तुमने क्या व्यवस्था बनाई है'', बैताल ने पूछा.'' ''हां बैताल, ग्राम-पंचायतों के सभी आय और व्यय का विवरण रखने के लिए हमने सभी ग्राम-पंचायतो में एक शासकीय कर्मचारी की नियुक्ति की है, जिसे सचिव या पंचायत कर्मी कहा जाता है'', विक्रम ने बतलाया.

‘‘तो तुम्हारा मतलब है कि वार्डो के पंच, सरपंच, सचिव व ग्राम-सभा मिलकर आय और व्यय का निर्धारण करते हैं’’, बैताल ने पूछा. ‘‘हां-बैताल ऐसा ही होता है’’, विक्रम ने कहा. ‘‘सबके निर्णय के उपरान्त ही पंचायत, सिचाई, पीने की पानी, नाली निर्माण, सी-सी रोड, बाज़ार, दुकान, पाठशाला, आंगनबाड़ी, औषधालय, कांजीहाउस, इत्यादि के निर्माण में धन राशि खर्च करती है’’, बैताल ने आगे पूछा. ‘‘अच्छा विक्रम यह बतलाओ कि सरपंच कभी किसी आवश्यक कार्य से कुछ दिनो के लिए गांव से बाहर हो, बीमार हो या उसकी मृत्यु हो जाए तब इन कार्यो को कौन करता है?’’

विक्रम ने कहा - ‘‘ऐसी परिस्थिति आने पर पंचो व्दारा पंचों में से ही चुना गया एक प्रतिनिधि जो उप सरपंच कहलाता है, सरपंच के सभी कार्यो को करने के लिए अधिकृत होता है.’’

बैताल ने कहा - ‘‘विक्रम तुमने अपने सभी राज्य के सभी गांवो के लिए इतनी सुन्दर व्यवस्था की है, जिसे सुनकर मेरा मन बहुत आनंदित है, पर एक छोटी सी

शंका यह है, कि क्या इस व्यवस्था में तुम्हारे गांव के सभी अमीर-गरीब ऊंच-नीच व जाति-पांति के लोगो को समान प्रतिनिधित्व मिल पाता है, विषेशकर महिलाओ को.'' विक्रम ने बताया - ''हां बैताल. पंचायती राज के अंतर्गत ऐसे वर्गो का विशेष ख्याल रखते हुए मैने पंचायत के कुल वार्डो में से एक तिहाई वार्ड केवल महिलाओ के लिए आरक्षित किये हैं. आरक्षित वार्डो में केवल आरक्षित वर्ग की महिलाएं ही चुनाव लड सकती है, अन्य नही. इसके अतिरिक्त ये महिलाए अन्य वार्डो से भी चुनाव लड़ सकती हैं.''

''बहुत सुन्दर विक्रम'' - बैताल ने कहा. ''तभी तो तुम्हारे राज्य का नाम दूर-दूर तक जाना जाता है. तो क्या ग्राम-पंचायतें ही तुम्हारे राज्य में शासन का एक मात्र आधार हैं?'' ''नही बैताल. ग्राम-पंचायतो की तर्ज पर ही कुछ गांवो के समुह से जिला पंचायतों का गठन किया गया है. जो कार्य ग्राम-पंचायतें स्थानीय स्तर पर करती है, वैसे ही कार्य जनपद पंचायते व जिला पंचायते अपने लिए निर्धारित क्षेत्रों में करती है.'' ''तुम्हारे अनुसार राज्य में

तीन प्रकार की पंचायत होती हैं - 1. ग्राम-पंचायत 2. जनपद पंचायत 3. जिला पंचायत'', बैताल ने अब तक की सुनी हुई बात को दोहराते हुए कहा.''

''बिल्कुल ठीक समझे बैताल'', विक्रम ने सिर हिलाते हुए कहा. अंत में बैताल अगले दिन फिर आने का वादा करके पीपल वृक्ष की ओर चला गया.

नगर पालिका और नगर निगम

अगले दिन बैताल को कंधे पर बैठाकर विक्रम धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा. थोडी दूर चलने के बाद दोनो एक ऐसे स्थान पर पहुंचे जो कातिक और केतकी के गांव से बड़ा था. इस स्थान पर पक्की सडकें, सडक किनारे खम्बों पर बिजली, बड़ी-बड़ी दूकाने व मोटर गाडियों को देखकर बैताल ने पूछा - विक्रम ये कौन सी जगह है? कातिक और केतकी के गांव में तो मुझे ये चीजे दिखाई नही दी थीं और यह स्थान काफी बड़ा भी है.

विक्रम ने कहा - हां बैताल. यह स्थान कातिक और केतकी के गांव से बडा है. जो स्थान गांवो से बड़ा होता है, उसे हम कस्बा कहते हैं. तो विक्रम क्या ऐसे स्थानो पर भी तुमने पंचायतों का गठन किया है? बैताल ने पूछा.

हां बैताल. आप सही समझ रहें हैं. किन्तु इनमे और गांवो की पंचायतों में मामूली सा अंतर है, विक्रम ने कहा. वह मामूली अंतर क्या है, बैताल ने शीघ्रता से पूछा. विक्रम ने कहा - बैताल जैसा कि मैने आपको बतलाया था,

स्थानीय स्तर पर प्रशासनिक कार्यो के संचालन व व्यवस्था के लिए ग्राम-पंचायतों का गठन किया जाता है, उसी प्रकार ऐसे स्थान जहां की जनसंख्या 5 हजार से 20 हजार तक होती है, वहां नगर पंचायत का गठन किया गया है. जिस जगह पर हम अभी है, वह नगर पंचायत है. पर विक्रम क्या तुम्हारे राज्य में यही सबसे बडा स्थान है अथवा इससे भी बड़ा स्थान है? अगर है तो वहां क्या व्यवस्था है? बैताल ने जानना चाहा.

हां बैताल - मेरे राज्य में ऐसे कई बड़े-बड़े स्थान हैं, और उन सभी स्थानो पर मैने व्यवस्था बना रखी है. ऐसे बड़े स्थान जहां की जनसंख्या 20 हजार से 1 लाख तक हो वहां नगर पालिका और जहां की जनसंख्या 1 लाख से अधिक हो वहां नगर निगम का गठन किया गया है, विक्रम ने विस्तार से बतलाते हुए कहा.

बहुत अच्छा विक्रम - बैताल ने प्रसन्न होकर कहा. पर मेरे मन में यह प्रश्न आ रहा है कि ऐसे बडे स्थानो पर वार्ड कैसे बनाए होंगे, उनकी जनसंख्या कितनी होगी और उसका चुनाव किस प्रकार होता होगा? बैताल ने तुरंत

प्रश्न किया. बैताल अब मन लगाकर सुनना - विक्रम ने कहा, जिस प्रकार ग्राम-पंचायतो में वार्डो की संख्या 10-20 तक होती है, उसी प्रकार नगर पंचायतो में भी वार्डो की संख्या 20 होती है. नगर पालिका में वार्डो की संख्या 15 से 60 और नगर निगम में 50 से 150 तक होती है, और प्रत्येक वार्ड से एक सदस्य उसी वार्ड के मतदाताओ व्दारा चुना जाता है, जो पार्षद कहलाता है. सभी वार्ड के मतदाताओं व्दारा नगर पालिका में अपना अध्यक्ष और नगर निगम में महापौर का चुनाव भी साथ-साथ किया जाता है. जिस स्थान पर हम खड़े हैं, वह नगर पंचायत है. यहां के मतदाताओं व्दारा 20 पार्षदों के साथ-साथ अपना एक अध्यक्ष, जो नगर पंचायत अध्यक्ष कहलाता है, को चुना गया है.

विक्रम क्या इन संस्थाओ में भी पंचायतो की तरह सचिव, पंचायत कर्मी होते हैं - बैताल ने पूछा. नही, इन स्थानो में शासकीय कर्मचारी के रूप में नगर-पंचायत व नगर-पालिकाओं में मुख्यकार्यपालन अधिकारी या मुख्य नगरपालिक अधिकारी तथा नगर निगमो में निगम

आयुक्त की नियुक्ति की जाती है, और ये अधिकारी राज्य की ओर से दी गई शासकीय राशि के साथ-साथ इन निकायो व्दारा अर्जित आय और उसके व्यय का हिसाब-किताब रखते हैं - विक्रम ने बतलाया.

बैताल ने कहा - अच्छा विक्रम अब यह बतलाओ कि ऐसे स्थान तो पंचायतो से काफी बडे होते हैं, और यहां की समस्याएं भी बड़ी होती होंगी. तो तुमने इन समस्याओं के निराकरण के लिए क्या व्यवस्था बनाई है?

विक्रम ने कहा - बैताल इन संस्थाओ में जो भी निर्वाचित पार्षद होते हैं, उनका अलग-अलग समूह बनाकर समिति बनाई जाती है, जिसमे 5 से 12 सदस्य होते हैं, जैसे जल समिति, शिक्षा समिति, कर समिति, स्वच्छता समिति, व्यवस्था समिति इत्यादि. ये समितियां अपने-अपने विभाग से सम्बंधित समस्याओ को हल कर व्यवस्था बनाए रखने के लिए जिम्मेदार होती हैं.

वाह विक्रम वाह तुम सचमुच एक बुध्दिमान शासक हो. जिस प्रकार तुमने गांवो के लिए तीन प्रकार की पंचायतों का गठन किया उसी प्रकार शहरों के लिए भी नगर

पंचायत, नगर पालिका, और नगर निगम का गठन किया है. बैताल ने हंसते हुए कहा. दोनो थोड़ी दूर चुप-चाप चलते रहे. तभी बैताल को एक बड़ा सा स्थान दिखाई दिया जहां बड़ी-बड़ी ईमारतें, रेलगाडी, कारखाने और हवाई जहाज भी दिखाई दे रहे थे. इन सभी को देखकर बैताल ने विक्रम को रोकते हुए कहा - विक्रम ये कौन सी जगह है, अब मुझे इसके बारे में बतलाओ.

ज़िला प्रशासन

जिस स्थान के बारे में आप पूछ रहे हैं वह नगर-निगम और जिला है - विक्रम ने कहा. नगर-निगम और जिला, एक ही स्थान दो प्रकार के कैसे हो सकते हैं? बैताल ने आश्चर्य प्रकट करते हुए पूछा.

नगर-निगम को तो मैने समझ लिया है, अब जिला क्या होता है, उसे भी बतलाओ बैताल ने कहा. जिस प्रकार स्थानीय व शहरी निकायों के आधार पर मैने त्रिस्तरीय पंचायतों का गठन किया है, उसी प्रकार प्रशासनिक आधार पर त्रि-स्तरीय प्रशासनिक ढ़ांचा भी बनाया गया है - विक्रम ने बतलाया. लगता है तुमको तीन की संख्या से ज्यादा लगाव है, तभी तो तुमने हर चीज को तीन में विभाजित कर दिया है, बैताल ने हंसते करते हुए कहा. हां बैताल, विक्रम ने भी हंसते हुए बतलाना शुरू किया. प्रशासनिक सुद्रढ़ीकरण के लिए मैने गावों के समूह से तहसील, तहसीलों के समूह से जिले और जिलो के समुह से सम्भाग का निर्माण किया है.

तो क्या इन स्थानो में निर्वाचित प्रतिनिधि ही प्रषासन के कार्यो को करते हैं? बैताल ने पूछा. नही बैताल, प्रशासनिक कार्यों को करने के लिए इन स्थानो में सरकारी अधिकारियों की भर्ती की जाती है. तहसील में तहसीलदार और अनुविभागीय अधिकारी राजस्व, जिले में कलेक्टर और सम्भागों में सम्भागायुक्त की नियुक्ति होती है, विक्रम ने कहा. विक्रम मुझे तुम्हारी बात ठीक से समझ नही आ रही है. इसे सार में मुझे समझाने का प्रयास करो - बैताल ने उत्सुकता से कहा. ठीक है बैताल! हम यहां थोड़ी देर रूकते है, और मै आपको रेखा चित्र के व्दारा इसे संक्षेप में समझाने का प्रयास करता हूं - विक्रम वहां रुकते हुए कहा.

देखो बैताल मै यहां पर एक रेखा चित्र बना रहा हुं। इसे आप ध्यान से समझने का प्रयास करना और अगर समझ न आये तो बार-बार पूछना. यह कहते हुए विक्रम ने रेखा-चित्र बनाते हुए बैताल को समझाया - देखो -

प्रशासनिक व्यवस्था		
गावों का समूह	तहसीलों का समूह	जिलों का समूह
तहसील	जिला	संभाग
तहसीलदार/अनुविभागीय अधिकारी राजस्व	कलेक्टर	संभागायुक्त

वाह विक्रम! इस रेखा चित्र को देखकर मै समझ गया कि तहसील में प्रशासनिक कार्य तहसीलदार और अनुविभागीय अधिकारी राजस्व, जिले में कलेक्टर और सम्भागों में सम्भागायुक्त व्दारा किया जाता है. क्या अपराधियों को दण्ड देने का कार्य भी ये लोग करते हैं? बैताल ने पूछा.

मेरे राज्य में दो तरह के दण्ड विधान है - दीवानी और अपराधिक! दीवानी विशेषकर राजस्व मामलो में इन अधिकारियों को सुनवाई का अधिकार दिया गया है, लेकिन अपराधिक मामलो में अलग से त्रि-स्तरीय न्याय व्यवस्था बनाई गई है, विक्रम ने समझाते हुए कहा.

वाह विक्रम-न्याय व्यवस्था में भी तीन स्तर, बैताल ने हंसते हुए कहा. हां बैताल, उचित न्याय के बिना सारी

व्यवस्था असफल हो जाती है। इस कारण मैने इस पर विशेष ध्यान दिया है. जिले के स्तर पर जिला एवं सत्र न्यायालय, राज्य स्तर पर उच्च-न्यायालय और देश के स्तर पर सर्वोच्च न्यायालय की व्यवस्था बनाई है, विक्रम ने गम्भीर होकर बतलाया.

बहुत खूब विक्रम. इन सभी बातों को सुनकर तो ऐसा लगता है कि तुम्हारे राज्य में कही कोई परेशानी नही है, बैताल ने प्रसन्न होकर कहा.

ऐसी बात नहीं है, थोडी बहुत परेशानी रहती है, जिसके बारे में हम कल चर्चा करेगें, विक्रम ने बैताल से कहा.

सार्वजनिक सम्पत्तियां

अगले दिन विक्रम से मिलते ही बैताल ने विक्रम से पूछा - विक्रम कल तुम कुछ परेशानियों के बारे में बात कर रहे थे, वह परेशानी क्या है? विक्रम ने कहा - बैताल मैं इस बात के लिए बहुत प्रयत्न कर रहा हुं कि मेरे देश के सभी नागरिको में अच्छे गुणों का विकास हो, किन्तु इस कार्य में अभी तक मुझे अपेक्षित सफलता नही मिल रही है. मुझे इसी बात की चिन्ता हमेशा बनी रहती है. लेकिन विक्रम अभी तक तो मुझे ऐसा भी कुछ दिखाई नही दिया, जिसके आधार पर मै यह कह सकूं कि तुम्हारे नागरिको में अच्छे गुण नहीं है, बैताल ने कहा.

विक्रम ने बतलाया - मैं अपनी जिस चिन्ता के बारे में आप से चर्चा कर रहा हूं वह सभी नागरिको के सम्बंध में नही है. कुछ ही नागरिक ऐसे है, जिनमे अच्छे गुण नही है, पर इन्हीं कुछ लोगों के व्दारा किये गये गलत कार्य बहुत से अच्छे नागरिको की सुविधाओ में बाधा डालते हैं. बात करते-करते दोनों शहर के बीच में स्थित रेल्वे स्टेशन के करीब पहुंचे जहां लोगो की भीड लगी हुई थी.

भीड को देखकर बैताल ने पूछा - विक्रम यहां इतनी भीड़ क्यों है?

आओ बैताल! थोड़ा पास जाकर पता करते है कि बात क्या है - विक्रम ने कहा. करीब जाकर मालूम हुआ कि कुछ लोगो ने रेल का सिग्नल पत्थर मारकर तोड़ दिया है, जिसके कारण रेल गाड़ी काफी देर से रुकी हुई है, और यात्रियो को परेशानी हो रही है. मै अपनी इसी चिन्ता के बारे में आप से बात कर रहा था - विक्रम ने दुखी होकर कहा. तुम्हारी चिन्ता सचमुच जायज़ है विक्रम - बैताल ने भी दुखी मन से कहा. पर विक्रम लोगो ने ऐसा क्यों किया? बैताल ने जानना चाहा.

विक्रम ने कहा - सार्वजनिक सम्पत्ति होने के कारण लोगों के मन में यह भाव है कि इसका नुकसान होने से मेरा क्या जाएगा? यह सार्वजनिक सम्पत्ति क्या होती है विक्रम - बैताल ने उत्सुकता से पूछा. विक्रम ने बतलाया - बैताल मेरे देश में लोगों के व्दारा दो प्रकार की सम्पत्ति का उपयोग किया जाता है. पहले प्रकार की संपत्ति निजि सम्पत्ति है. यह ऐसी सम्पत्ति होती है जिस पर लोगों का

व्यक्तिगत अधिकार होता है, और अन्य लोग बिना अनुमति के उसका उपयोग नही कर सकते, जैसे लोगों का घर, मोटर सायकल, कार, खेत, खलिहान, इत्यादि. दूसरे प्रकार की संपत्ति सार्वजनिक सम्पत्ति है. यह ऐसी सम्पत्ति है, जिसका निर्माण सरकार के तरफ से सभी लोगों की सुविधा के लिए किया जाता है तथा जिसका उपयोग करने के लिए किसी की अनुमति की आवश्यकता नही होती है, जैसे रेल, सड़क, अस्पताल, पोस्ट आफिस, बैंक,पाठशाला, ऐतिहासिक महत्व के भवन, मंदिर तथा खेल के मैदान.

बहुत अच्छा विक्रम - तुमने तो अपने देश के सभी नागरिको की सुविधाओ को ध्यान में रखकर बहुत कार्य किया है, पर लोग इसे अपना समझकर, इसकी सुरक्षा व संरक्षण करें, इसके लिए भी तुम्हे सतत प्रयास करते रहना चाहिए - बैताल ने विक्रम को सुझाव देते हुए कहा. हां बैताल आप बिल्कुल सही कह रहे हैं. इसके लिए मैने कुछ व्यवस्था भी बना रखी है, जैसे बच्चों में अच्छे नागरिक गुणो के विकास के लिए ऐसी महत्वपूर्ण व

आवश्यक बातों की शिक्षा उनको पढाए जाने वाले विषयों में रखकर दी जा रही है. इसके बावजूद यदि लोग सार्वजनिक सम्पत्ति को नुकसान पहुंचाते है, तो उन पर राज्य की पुलिस व्दारा कानूनी कार्यवाही की जाती है.

बैताल ने कहा - तुम्हारी बातो से मुझे पूरा विश्वास है विक्रम कि वह दिन दूर नहीं जब प्रत्येक नागरिक के व्दारा सार्वजनिक सम्पत्ति की देखरेख उसी प्रकार की जाएगी, जिस प्रकार वे अपनी निजि सम्पत्ति की करते हैं.

बातें करते-करते विक्रम और बैताल एक दूसरे गांव में पहुंचे जहां कुछ बच्चों को देखकर बैताल ने विक्रम से रुकने के लिए कहा.

बच्चों के अधिकार

बैताल इन बच्चों को देखकर आपने क्यों रोका - विक्रम ने पूछा. देखो विक्रम ये कितने प्यारे बच्चे हैं. इन्हें देखकर मुझे मेरा बचपन याद आ गया और इन बच्चों के साथ खेलने का मन करने लगा - बैताल मुस्कुराते हुए बोला.

आप सही कह रहे है बैताल! बचपन होता ही ऐसा है. अगर हमारा बचपन आनंद,सुख व चिंता रहित व्यतीत हो, तो इसका प्रभाव हमारे आगे के जीवन पर अच्छा पडता हैं- विक्रम ने कहा. इसका मतलब है विक्रम कि तुमने अपने देश के सभी बच्चों के जीवन में खुशियां लाने के लिए बहुत कुछ किया होगा, मैं सही कह रहा हूं न विक्रम, बैताल ने पूछा.

हां बैताल, पर बच्चों के सुखमय जीवन के लिए मुझे अभी और भी बहुत कुछ करना होगा - विक्रम ने चिंता के साथ कहा. ये तो तुम्हे करना ही होगा विक्रम - बैताल ने विक्रम की बातों को जोर देते हुए दोहराया. तभी बैताल की नजर एक दुकान पर पडी जहां एक बच्चा सामान की

बोरी उठा रहा था. उसे देखकर बैताल ने विक्रम से कहा - विक्रम देखो-देखो वह बच्चा कितना वजनी सामान को उठा रहा है और दुकानदार वही पर खड़ा है पर उसकी कोई मदद नही कर रहा है. विक्रम ने कहा - यह बहुत दुर्भाग्य की बात है कि आज भी हमारे आस-पास ऐसे बहुत से लोग है जो बच्चों के स्वाभाविक व आनंदमय जीवन को कुचलने का कार्य करते हैं.

बैताल ने पूछा - बच्चो का स्वाभाविक जीवन क्या है विक्रम? विक्रम ने बतलाया-मन भर खेलना, पढ़ना, पेट भर खाना, प्यार और दुलार पाना, खतरों से सुरक्षा, समानता, शोषण व अत्यचार से मुक्त जीवन जीना ही बच्चों का स्वाभाविक जीवन है. पर विक्रम देखो तो ये दुकानदार कैसे उस बच्चे का शोषण कर उसका स्वाभाविक जीवन छीन रहा है - बैताल ने थोड़ा घृणा के भाव से कहा.

हां बैताल! कुछ लोग स्वार्थ व लालच के कारण बच्चों से उनका सुख व आनंद छीनने का कार्य करते हैं. कुछ माता-पिता भी ऐसे होते है जो अपने बच्चों में लडके -

लडकी के आधार पर भेदभाव करते हैं. कई मां-बाप तो ऐसे भी होते है जो अपने बच्चे को बेच देते है और ऐसे बच्चे कई प्रकार के शोषण, जुल्म और अत्याचार के शिकार हो जाते हैं, जिनमे बच्चों का यौन शोषण प्रमुख बात है, विक्रम ने विस्तार से बतलाया. तो क्या तुमने बच्चों के इस प्रकार होने वाले शोषण के खिलाफ कुछ उपाय नहीं किए हैं ? - बैताल बोला.

विक्रम ने समझाया - मेरी तरफ़ से बच्चों का शोषण रोकने व उन्हे स्वतंत्रता, समानता व प्रेम के साथ भविष्य सवांरने के अवसर देने हेतु बहुत से उपाय किए हैं, जिनमे जन-जागरूकता, शिक्षा का अधिकार व पास्को एक्ट प्रमुख हैं.

शिक्षा का अधिकार क्या है? बैताल ने उत्सुकता से पूछा. हमने अपने देश में रहने वाले सभी 6-14 आयु वर्ग के बच्चों को निशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार दिया है. सभी बच्चे पढेंगे-लिखेंगे तो उनमे अपने अधिकारो के प्रति धीरे-धीरे समझ आएगी - विक्रम ने गर्व के साथ बतलाया.

और पास्को एक्ट क्या है - बैताल ने जल्दी से पूछा. विक्रम ने कहा - बैताल जैसा कि मैने आपको पहले बतलाया था कि बच्चों के शोषण में सबसे घृणित और कष्टकारक, यौन शोषण है. बच्चों को इससे बचाने के लिए पास्को एक्ट लागू किया है. इसके अंतर्गत बच्चों का यौन शोषण करने वालो को कड़े से कड़ा दण्ड देने का प्रावधान है. तुमने बिल्कुल सही काम किया है विक्रम, ऐसा करने से ही बच्चों का शोषण करने वालों को सबक मिलेगा और बच्चों को उनका सुखमय जीवन - बैताल ने संतुष्टि के साथ कहा.

विक्रम और बैताल दोनो बात करते-करते एक शहर में पहुंच गए। शहर की भीड़-भाड़ और अव्यवस्था को देखकर बैताल ने विक्रम से पूछना आरंभ किया.....

सामान्य चेतना

1. दुर्घटना से देर भली

विक्रम देखो तो उस बोर्ड पर लिखा है - दुर्घटना से देर भली. उसके बाद भी ये लोग इतनी जल्दबाजी कर रहे हैं. लगता है, इस बोर्ड पर लिखी पंक्ति को इन्होने नही पढ़ा है - बैताल ने नाराजगी के साथ विक्रम से कहा. नहीं बैताल ऐसी बात नहीं है. पढ़ते तो सभी है किन्तु उसे गम्भीरता से ग्रहण कर अपनी आदतों में शामिल नहीं करते - विक्रम ने भी लोगो के प्रति नाराजगी दिखाते हुए कहा. और क्या विक्रम, देखो न इनकी जल्दबाजी के कारण आखिर इन्ही को परेशानी हो रही है. सभी को आने जाने की जल्दी पड़ी है. और इसी कारण कोई भी आ-जा नही पा रहा है - बैताल ने व्यंग्यात्मक ढ़ंग से कहा. हां बैताल आप ठीक कह रहे हैं. लोगों की यही जल्दबाजी दुर्घटना का कारण बनती है और कई लोगों को अपना जीवन समय से पहले गंवाना पड़ता है, जिसके कारण ऐसे परिवारो के आश्रित लोगो पर दुख और कष्ट का पहाड़ गिर जाता है - विक्रम ने दुखी होकर कहा.

बैताल ने पूछा - पर विक्रम आप इस देश के प्रमुख व्यक्ति हो. आपकी भी यह जिम्मेदारी बनती है कि सभी लोगो का जीवन सुरक्षित रहे. इसके लिए आपने क्या व्यवस्था बनाई है? विक्रम ने कहा - बैताल मुझे मेरी जिम्मेदारी का पूरा एहसास है और इसी कारण मैने सड़क दुर्घटनाओ में होने वाले मौतों को रोकने के लिए बहुत सारे नियम बनाकर, सख्ती से पालन का निर्देश दिया है. सड़क दुर्घटनाओं में होने वाली मौतो को रोकने और लोगो की सुरक्षा के लिए आपने क्या-क्या नियम बनाए है-हैं - बैताल ने पूछा.

सुरक्षित यातायात के लिए जो प्रमुख नियम है, उसे ध्यान से सुनना बैताल - विक्रम ने कहा. मै आपकी बातो को ध्यान से ही सुनता हुं विक्रम - बैताल ने हंसते हुए कहा. तो सुनो - विक्रम ने बतलाना आरंभ किया.

1 - सभी लोग सड़क पर चलते समय अपने बांए हाथ की ओर ही चलेंगे. 2. सड़क पार करते समय पहले दांए, फिर बांए और फिर दांए देखकर ही धीरे-धीरे सड़क पार करेंगे. 3. शहरो में चौक-चैराहों पर लगे संकेतक को देखकर आगे

बढेंगे अर्थात् यदि लाल संकेत हो तो वहा रुकें, पीला संकेत हो तो धीरे-धीरे आगे बढें और हरा संकेत होने पर बिना रोक टोक आगे बढ़ें. 4. शहरों में सड़को पर बने जेब्रा क्रासिंग पर गाड़ी की रफ्तार धीमी करें.

यह जेब्रा क्रासिंग क्या होती है - बैताल ने विक्रम के बात को बीच में ही काटते हुए पूछा. सड़क पार करने वाले पैदल यात्रियों की सुरक्षा व सुविधा को ध्यान में रखकर शहरो में सड़को पर बीच-बीच में काली और सफेद पट्टी की पंक्ति बनाई जाती है, जिसे जेब्रा क्रासिंग कहते हैं. सभी वाहन चालकों के लिए यह स्पष्ट निर्देश हैं कि इन स्थानो पर अपनी गाड़ी की रफ्तार कम रखें और पहले पैदल यात्रियों को सड़क पार करने दें, उसके बाद ही अपनी गाड़ी आगे बढ़ाएं. आपकी बातों को सुनकर मन में विश्वास होने लगा है कि यदि लोग इन निर्देशों का पालन करें तो सचमुच सड़क दुर्घटनाओ में होने वाले मौतों की संख्या को कम किया जा सकता है. और क्या-क्या नियम हैं - बैताल ने पूछा.

विक्रम ने बतलाया- 5. दो पहिया वाहन में दो से ज्यादा लोग न बैठें. दोनो व्यक्ति अनिवार्य रूप से हेलमेट पहनें. चार पहिया वाहन का उपयोग करने वाले सभी लोग सीट-बेल्ट का उपयोग करें. 6. वाहन चलाते समय किसी भी नशीले पदार्थ का सेवन न करें. वाहन से सम्बंधित सभी कागजात अपनी गाड़ी में ही रखें. 7. बिना लाइसेंस के गाड़ी न चलाएं.

विक्रम उधर देखो - बैताल ने विक्रम की बात फिर से काटते हुए कहा - क्या वे बच्चे जो अभी यहां से गाड़ी चलाते हुए गुजरे हैं, उनके पास भी लायसेंस है. नहीं बैताल इन बच्चों के पास लायसेंस नहीं है. इन बच्चों को गाड़ी देना, इनके मां बाप की लापरवाही को दिखाता है और यदि कुछ ऊपर-नीचे हो जाता है, तो उम्र भर पछताते रहते हैं - विक्रम ने जवाब दिया. पर विक्रम बच्चे गाड़ी न चलाएं, इसके लिए भी आपको कुछ सशक्त कदम उठाने चाहिए - बैताल ने विक्रम को समझाते हुए कहा. हमने बहुत से कदम उठा रखे हैं - जैसे 1. 18 साल से कम उम्र के व्यक्ति को लायसेंस नही दिया जाता. 2.

बच्चों में जागरूकता के लिए प्रति वर्ष शालाओं में कार्यशाला का आयोजन किया जाता है, जिसमे पालक भी उपस्थित रहते हैं. 3. समय-समय पर यातायात विभाग व्दारा सड़क-सुरक्षा सप्ताह का आयोजन किया जाता है, इत्यादि - विक्रम ने कहा. इन सभी निर्देशों के बावजूद यदि कोई नियमों का उल्लघन करें तब क्या - बैताल ने पूछा.

विक्रम ने कहा - ऐसी परिस्थिति में यातायात पुलिस सख्ती से कार्यवाही करते हुए सम्बंधित व्यक्ति का लायसेंस रद्द कर वाहन भी जब्त कर सकती है. पर विक्रम यह बतलाओ कि जिसके पास लायसेंस है उसे सही ढ़ंग से गाड़ी चलाना आता ही है, यह आप कैसे सुनिश्चित करते हैं - बैताल ने जानना चाहा. विक्रम ने कहा - एक लम्बी प्रक्रिया का पालन करने के बाद ही लोगो को लायसेंस दिया जाता है, जिसमे यातायात से सम्बंधित विभिन्न संकेतको की पहचान व दिशा निर्देशों के पालन की शपथ भी ली जाती है. वाह विक्रम, आपकी बातों को सुनकर अब मेरे मन में यह विश्वास हो गया है कि सभी

लोग आपके व्दारा बनाए गए नियमों का पालन कर अपने साथ-साथ अन्य लोगो के भी जीवन का मूल्य समझेंगे बैताल ने प्रसन्नता से कहा.

2. <u>कर्ज एवं बचत</u>

विक्रम और बैताल दोनो चलते-चलते शहर के बीच मे पहुंच गए, जहां एक भवन के पास लोगों की भीड़ देखकर बैताल ने विक्रम को इशारे से रुकने के लिए कहा और पूछा - विक्रम ये कौन सा भवन है और यहां पर इतनी भीड़ क्यों? यह सहकारी बैंक का भवन है, और यहां पर एकत्रित भीड़ आस-पास के गांवो के किसानो की है, जो अपनी बचत के रुपए जमा करने या अपनी आवश्यकता के लिए कर्ज लेने आए हुए हैं - विक्रम ने समझाते हुए कहा. बचत और कर्ज ये क्या होते हैं, बैताल ने पूछा.

विक्रम ने कहा - मेरा देश किसानो का देश है. किसानों को प्रतिवर्ष खेती करने के लिए बीज, खाद, दवाई, हल के लिए बैल व ट्रेक्टर इत्यादि की आवश्यकता होती है. जिन

किसानों के पास ये चीजें नहीं होती वे उन्हें इसी बैंक से कर्ज लेकर खरीदते हैं. तो क्या बैंक ये कर्ज किसानों को मुफ्त में देते हैं - बैताल ने पूछा. नहीं बैताल, बैंक किसानों को बहुत ही कम ब्याज दर पर यह कर्ज देते हैं, ताकि किसानों की आवश्यकता की पूर्ति भी हो जाए और उन्हें परेशानियों का सामना भी न करना पड़े, विक्रम ने कहा. पर विक्रम आखिर किसानों को कर्ज लेना ही क्यों पड़ता है -बैताल ने पूछा. सभी किसान कर्ज लेते हों ऐसा भी नहीं है - विक्रम ने कहा. आप तो जानते हैं कि कुछ किसानो के पास कम जमीन है. ऐसे किसानों को उस जमीन से इतनी फसल नहीं मिल पाती कि उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके. इन लोगों को अपनी उसी फसल के भरोसे बच्चों की शादी, पढ़ाई-लिखाई, बीमारी का ईलाज आदि करना पड़ता है, जिसके कारण उन्हें समय-समय पर कर्ज लेना पड़ता है. पर विक्रम ऐसे में तो वह बेचारा किसान कभी भी कर्ज से मुक्त नहीं हो पाता होगा - बैताल ने दुखी होकर कहा.

हां बैताल कुछ हद तक आपकी बात सही भी है, पर अपने किसानों को इन सबसे बचाने के लिए मैने बहुत सी व्यवस्था कर रखी है - जैसे - शादी-विवाह में फिजूलखर्ची को रोकने के लिए जागरूकता अभियान, गरीब परिवार के बच्चों के लिए मुफ्त शिक्षा और छात्रवृत्ति तथा बीमारियों के इलाज के लिए स्मार्ट-कार्ड और गांव के चालाक साहूकारों व दलालों से बचाने के लिए सहकारी बैंक व अनाज मंड़ी की स्थापना. इसके अतिरिक्त प्रत्येक गांव में विभिन्न प्रकार के महिला स्व-सहायता समूह का गठन भी किया गया है. जैसा कातिक और केकती के गांव में हमने देखा था - बैताल ने याद करते हुए पूछा.

हां बैताल, बिल्कुल वैसे ही महिला स्वसहायता समुह का गठन प्रत्येक गांव में हुआ है. ये महिला स्व सहायता समूह आपस मे मिलकर कई चीजो का निर्माण कर उन्हे आस-पास की बाजारो में बेचते हैं, और उससे प्राप्त आय को आपस में बांटकर अपनी आवश्यकता की पूर्ति करते हैं. आवश्यकताओं की पूर्ति के बाद बची हुई राशि ये लोग बैंको में जमा कर देते हैं, साथ ही अपने सदस्यों को कर्ज

भी देते हैं -विक्रम ने समझाया. तो आपका मतलब है, कि लोगों का यह कर्ज और बचत का कार्य एक न्याय संगत सीमा में ही होता है - बैताल ने पूछा.

हां बैताल - विक्रम ने विश्वास के साथ कहा।

3. <u>जल ही जीवन है</u>

चलते-चलते बैताल और विक्रम दोनों थक गए थे. शहर की सड़क किनारे पेड़ देखकर बैताल ने विक्रम से कहा - विक्रम थोड़ी देर यहां रुकते है, फिर आगे बढ़ेंगे. विक्रम ने हां में सिर हिलाते हुए अपनी सहमति दी और दोनो पेड़ की छाया में आराम करने के लिए रुक गए. थोड़ी देर आराम करने के बाद बैताल ने विक्रम से कहा - विक्रम आस-पास देखो तो कहीं पानी है क्या? बड़ी ज़ोर की प्यास लगी है. इससे पहले की विक्रम आगे बढ़ता, बैताल ने कहा-विक्रम आप रुको, मुझे वहां पानी का नल दिखाई दे रहा है. मैं पानी पी कर आता हूं. ऐसा कहते हुए बैताल आगे बढ़ा. थोड़ी देर बाद बैताल जब वापस आया तो उसका चेहरा गुस्से से लाल था. आते ही उसने विक्रम से गुस्से में बोला - विक्रम ये क्या है? वहां पर तीन नल

लगे हुए हैं, लेकिन किसी भी नल से पानी नहीं निकल रहा है, और प्यास से मेरा बुरा हाल हो रहा है. बैताल ने एक ही सांस में सब कुछ कह दिया. बैताल के गुस्से को देखकर विक्रम ने कहा-आप शांत हो जाईए. आपके लिए पानी की व्यवस्था मैं करता हूं.

बैताल झट से विक्रम के कंधे पर बैठ गया, और विक्रम आगे बढ़ा. थोड़ी दूर चलने के बाद विक्रम को एक नल दिखाई दिया. विक्रम वहां रुककर बैताल से बोला - आप अपनी प्यास बुझा लीजिए. बैताल ने नल से पानी पीकर विक्रम से कहा - ये क्या है विक्रम? आप तो कहते थे कि शहरों में रहने वाले लोगों के लिए पीने के पानी की व्यवस्था नगर निगम करती है. क्या यही नगर निगम की व्यवस्था है? मै तो यह सोचकर परेशान हूं कि जहां पर हम पहले रुके थे, वहां रहने वाले लोगों की क्या दशा होगी! बैताल ने नाराज होकर कहा.

बैताल की नाराजगी का सम्मान करते हुए विक्रम ने कहा - बैताल यहीं पास में ही नगर निगम का कार्यालय है.

आओ वहां चलकर पता करते है कि यह अव्यवस्था क्यों हैं?

दोनो ने नगर निगम के कार्यालय में जाकर पता किया तो ज्ञात हुआ कि किसी ने आगे की ओर जाने वाली पानी की पाईप को तोड़ दिया है, जिसके कारण पानी कुछ मोहल्लों तक नही पहुंच पा रहा है. साथ ही यह बतलाया गया कि यह अव्यवस्था कुछ देर में ठीक कर ली जाएगी.

कार्यालय में पदस्थ कर्मचारी के बातों से संतुष्ट होकर दोनो बाहर निकले और निकलते ही बैताल ने कहा - विक्रम जब इतने बड़े शहर की यह स्थिति है, तब तो गांवो में पीने के पानी का संकट ज्यादा ही होगा? नही बैताल ऐसा नही है - विक्रम ने कहा. गांवो में प्रत्येक मोहल्ले में एक से ज्यादा हेन्ड पम्प के साथ-साथ भूमिगत टेपनल की व्यवस्था की गई, जिससे लोगो को पीने के लिए पानी मिल जाता है. इसके अतिरिक्त गांव वालों के अन्य निस्तारी कार्य व मवेशियों के लिए तालाबों को ट्यूबवेल से भरा जाता है.

विक्रम मैने रास्ते में देखा कि कुछ कुंओं को कचरे से भर दिया गया है. क्या अब कुंओं की उपयोगिता नही रही है? बैताल ने पूछा. हां बैताल, विक्रम ने कहा - आप तो जानते हैं कि लोगो की गलत आदतों व स्वार्थो के कारण विगत कुछ वर्षों से वर्षा की मात्रा कम होती जा रही है. इसके कारण भूमिगत स्रोतों से जल की प्राप्ति भी कठिन हो गई है. यही कारण है कि आज ज्यादातर कुंए और हेन्डपम्प अनुपयोगी हो गए हैं और जगह-जगह ट्यूबवेल की खुदाई करनी पड़ रही है. तो क्या यही स्थिति आपके पूरे देश में है - बैताल ने चिंतित होकर पूछा.

विक्रम ने कहा - कुछ स्थानो को छोड़कर ज्यादातर जगहों में विशेषकर गर्मी के दिनो में पानी की समस्या उत्पन्न होती है. इस समस्या से आप कैसे निपटते हैं - बैताल ने तुरन्त पूछा.

विक्रम ने बतलाया - इसके लिए हमने बहुत से उपाय किए हैं, जैसे वर्षा के पानी को एक जगह इकट्ठा करने के लिए बड़ी-बड़ी नदियों में बांध, गांवो में जगह-जगह तालाब, छोटे-छोटे नालों में स्टाप डेम, ट्यूबवेल, हेन्डपम्प

व आवश्यकता पड़ने पर टैंकर से पानी पहुंचाने का कार्य इत्यादि. इसके अतिरिक्त लोगों को जल की कीमत समझाने के लिए जल संरक्षण पर विविध कार्यशाला, नुक्कड़ नाटक, जन जागरूकता अभियान और राजीव गांधी जल संरक्षण मिशन भी आरंभ किए गए हैं.

ठीक है विक्रम, मै आपकी बातों पर विश्वास कर लेता हूं, लेकिन मैं जब भी किसी गांव या शहर से गुजरूं तो मुझे हर जगह पीने के लिए पानी मिलना चाहिए -बैताल ने हंसते हुए कहा. मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि बिल्कुल ऐसा ही होगा - विक्रम ने चलते-चलते कहा।

ट्रांसजेण्डर / थर्ड जेण्डर

विकम और बैताल दोनों खामोशी से चलते रहे. अचानक बैताल की नजर एक घर के बाहर एकत्रित भीड़ पर गई. वहां से किसी के नाचने-गाने की आवाजें आ रही थीं. बैताल के मन मे इच्छा जागी कि उस स्थान पर जाकर देखा जाए कि वहां हो क्या रहा है, और अपनी जिज्ञासा पूर्ति के लिए विक्रम से पूछा - विक्रम वहां ये भीड़ क्यों है और कौन नाच गा रहा है? चलो वहां जाकर देखते हैं. वहां पहुंचकर बैताल ने पूछा - विक्रम ये औरतें कौन हैं? ये इतने जोर-जोर से क्यों गा रही हैं और लोगो की भीड़ इनके गीतों को सुनने के बजाए इन पर हंस क्यों रही है?

विक्रम ने कहां-बैताल ये औरते नहीं हैं, बल्कि ये थर्ड़ जेण्डर हैं. थर्ड़ जेण्डर! ये थर्ड़ जेण्डर क्या है! बैताल ने आश्चर्य से पूछा.

बैताल आप तो जानते है कि ज्यादातर लोग या तो पुरुष होते हैं या महिला जिन्हे फर्स्ट और सेकेण्ड जेण्डर कहां जाता है, किन्तु कुछ लोग ऐसे भी होते हैं, जो प्राकृतिक कारणो से इन दोनों में से किसी भी जेण्डर में नहीं आते.

ऐसे लोगों को थर्ड़ जेण्डर कहां जाता है. रह गया सवाल आपके दूसरे प्रश्न का कि ये लोग जोर-जोर से क्यों नाच-गा रहे हैं, तो इसका कारण यह है कि थर्ड़ जेण्डर के लोग खुशी व उत्सव के अवसर पर नाच-गा कर दुवाएं देते हैं, और बदले में उन्हे पैसे मिलते हैं - विक्रम ने आगे कहा. लेकिन बैताल आपका यह प्रश्न कि लोग इन पर हंसते क्यों हैं, यह मुझे भी अच्छा नहीं लगता, पर लोगों के हंसने का कारण उन्हें अपने से हीन समझना ही है. तो क्या वे सचमुच दूसरों से हीन हैं? विक्रम-बैताल ने पूछा.

नहीं बैताल, यह लोगों की गलत धारणा है - विक्रम ने कहा. जैसा कि मैने आपको पहले बतलाया है, प्राकृतिक कारणो से इनमें स्पष्ट जेण्डर का विकास नही हो पाता. अन्य बातों में वे मेरे जैसे ही इंसान हैं. तो लोग उन पर न हंसे और उनका अपमान न हो इसके लिए आपने क्या कार्य किया है - बैताल ने पूछा.

इसके लिए मैने आरंभिक स्तर पर ही शालाओं के पाठ्यक्रम में इसे सम्मिलित कराया है, ताकि बच्चों के मन में आरंभ से ही थर्ड़ जेण्डर के प्रति सम्मान का भाव

रहे. इसके अतिरिक्त इन लोगों को सामान्य इन्सानों की तरह ही सभी अधिकार समानता के साथ दिए गए हैं. यही कारण है कि आज इनकी स्थिति में काफी सुधार हुआ है और समाज का नज़रिया भी इनके प्रति बदला है - विक्रम ने जवाब दिया.

तो आपका कहना है कि समाज से अब थर्ड़ जेण्डर के लोगों को अपनापन और सम्मान मिल रहा है - बैताल ने जानना चाहा. हां बैताल! और अगर थोड़ी बहुत कमी है भी तो वह शिक्षा के प्रचार-प्रसार के साथ खत्म हो जाएगी - विक्रम ने विश्वास के साथ कहा.

अंत में बैताल बोला - अच्छा विक्रम मेरा जाने का समय आ गया है. आपकी व्यवस्था और उसको बनाए रखने की लगन को देखकर मैं बहुत खुश हूं. मन में अभी भी बहुत कुछ जानने की लालसा है, किन्तु अभी मुझे जाना है. पर जाते-जाते मैं वादा करता हूं कि अगले साल हम फिर मिलेंगे. इतना कहकर बैताल उसी पीपल की ओर उड़ गया, जहां से वह विक्रम के कंधे पर सवार हुआ था.

.....